चीन फिर बना सबसे बड़ा व्यापार भागीदार

वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़े...2020 में अमेरिका को पीछे छोड़ चीन से सबसे ज्यादा द्विपक्षीय कारोबार

नई दिल्ली। महामारी के दबाव, सीमा पर तनातनी और आत्मनिर्भर भारत अभियान के बावजूद 2020 में चीन हमारा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार रहा। वाणिज्य मंत्रालय ने बताया है कि एकतरफा रूप से भारत के सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी चीन के साथ व्यापारिक भागीदारी 2019 से कम रही, फिर भी अमेरिका को पीछे छोड़ दिया।

मंत्रालय के अनुसार, 2020 में चीन-भारत का द्विपक्षीय कारोबार 87.65 अरब डॉलर रहा, जबकि अमेरिका के साथ 76 अरब डॉलर कारोबार हुआ। चीन के साथ व्यापार में कमी तो आई है, क्योंकि 2019 में दोनों पड़ोसी देशों का साझा व्यापार 92.1 अरब डॉलर रहा था। बावजूद इसके अमेरिका के साथ व्यापार में कमी की वजह से चीन फिर बड़ा भागीदार बन गया। महामारी की वजह से पिछले साल अमेरिका के साथ उत्पादों का आयात-निर्यात कम रहा। चीन के साथ सामरिक तनाव बढ़ने और भारत सरकार की ओर से दर्जनों चीनी एप पर प्रतिबंध व निवेश पर रोक के बावजूद भारी मशीनरी, दूरसंचार उपकरण और होम अप्लायंस जैसे उत्पादों पर हमारी निर्भरता बनी हुई है। भारी

87.6 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार रहा चीन के साथ

चीन को निर्यात 16.15% बढ़ा

2020 में भारत ने न सिर्फ चीन से आयात घटाया, बल्कि निर्यात भी 16.15% बढ़ाने में कामयाब रहा। इस दौरान भारत से कुल 20.27 अरब डॉलर का निर्यात हुआ। निर्यात और बढ़ाने के लिए सरकार घरेलू विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत बना रही है। उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना के तहत सहायता भी अपनी कंपनियां भारत में लगाना चाहता है, लेकिन भारत सरकार चीन के इंजीनियर को वीजा नहीं दे रही।

चीन के साथ सबसे बड़ा व्यापार घाटा

चीन पर आयात निर्भरता की वजह से भारत का व्यापार घाटा भी सबसे ज्यादा इसी देश के साथ है। 2020 में चीन के साथ हमारा व्यापार घाटा 45.91 अरब डॉलर रहा। यानी निर्यात के मुकाबले हमने चीन से 45.91 अरब डॉलर का ज्यादा आयात किया। इस दौरान चीन से कुल आयात 66.78 अरब डॉलर रहा, जो भारत के दूसरे और तीसरे बड़े साझेदार अमेरिका-यूएई से भी ज्यादा है। हालांकि, आयात 10.87% और व्यापार घाटा 19.39% नीचे आया है।

चार-पांच साल रहेगी चीन पर निर्भरता

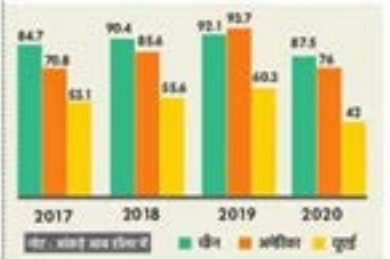

नेशनल यूनिवर्सिटी सिंगापुर में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश विशेषज्ञ व अर्थशास्त्री अमितेंदु पालित का कहना है कि चीन के साथ व्यापार में कमी लाने के लिए अभी इंतजार करना होगा। पीएलआई योजना बेहतर है, लेकिन घरेलू विनिर्माण क्षेत्र पर इसका व्यापक असर पहुंचने में चार-पांच साल लग सकते हैं। तब तक चीन के साथ भारत की निर्भरता बनी रहेगी। चीन से कुल आयात में 51 फीसदी हिस्सेदारी सिर्फ भारी मशीनरी की रहती है।

तीन बड़े साझेदारों के साथ भारत का व्यापार

चीन से एफडीआई नीति में कोई बदलाव नहीं : वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली। चीन के निवेश प्रस्तावों को मंजूरी देने संबंधी मीडिया रिपोर्ट को खारिज करते हुए वाणिज्य मंत्रालय ने कहा है कि सीमा पर तनाव घटने के बावजूद चीन से एफडीआई नीति में कोई बदलाव नहीं आया है। मंत्रालय से जुड़े सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि चीन से प्राप्त निवेश को लेकर न तो नीति बदली है और न भविष्य में संभावना है। चीन से आने वाले सभी निवेश को सरकार के अनुमति नियामकों का पालन करना होगा और उन्हीं एफडीआई को मंजूरी दी जाएगी, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा पर असर नहीं पड़ेगा। भारत सरकार ने हाल में जिन चीन प्रस्तावों को हरी झंडी दिखाई है, उनमें से एक होमकेयर और एक जापान की कंपनी है।